Dr. Girija Uranw
Associat professor
Depatt of psychology
Rohtas mahila college, Sasaram
B.A. part-II paper III Group A

Date: / /
Page No.:

अच्छी उपकल्पना की विशेषता
(criteria of a good Hypothesis)

यदि हम प्राक्कल्पना को केवल स्वतंत्र या निराधारपूर्ण विचार ही मान लें तो हमारे स्वप्न भी इसी श्रेणी के अन्तर्गत आ जायेंगे। परन्तु सभी विचार वैज्ञानिक नहीं हो सकते। प्राक्कल्पनाओं पर अपने अध्ययन को आधारित करने के बाद, अध्ययन कार्य में किसी भी परिवर्तन या संशोधन की आवश्यकता महसूस हो सकती है। इन प्राक्कल्पनाओं में आवश्यकता की पूर्ति की क्षमता रहती है, इसलिये इन प्राक्कल्पनाओं को हम कार्यवाहक प्राक्कल्पनाओं की संज्ञा देते है।

श्रेष्ठ प्राक्कल्पनाओं में आधारात्मक स्पष्टता रहती है। प्राक्कल्पनाओं में दो प्रकार की स्पष्टता होनी चाहिए- भाषा संबंधी और परिभाषा संबंधी स्पष्टता। प्राक्कल्पनाओं में प्रयोग की जाने वाली अवधारणाओं को स्पष्ट होना चाहिए। विचारधाराओं को बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए। जो शब्द प्रयुक्त हो उनका अर्थ स्पष्ट होना चाहिए। परिभाषित अर्थ ऐसा हो, भाषा ऐसी हो कि अध्ययनकर्ता को उसे समझने में कोई कठिनाई नहीं हो। परिभाषाओं में

सामान्य स्वीकृति के गुण का रहना अत्यावश्यक है। स्पष्ट प्राक्कल्पना में वैज्ञानिक का अभाव रहता है. अतः उसके परिणाम के भी अवैज्ञानिक होने की संभावना रहती है।

प्राक्कल्पनाओं में ऐसी अवधारणाएं हों, ऐसे पूर्व विचार हों जिनकी सत्यता का वास्तविक तथ्यों के आधार पर परीक्षण हो सके। इनमें वास्तविकता को विद्यमान होना चाहिए। आदर्शात्मक निर्णयों से संबंधित नहीं होना चाहिए। इनमें किसी आदर्श को प्रस्तुत करना अनुचित होगा।

प्राक्कल्पना का संबंध अध्ययन-विषय के किसी विशेष पक्ष से होना चाहिये। प्राक्कल्पना सभी प्रकार की क्रियाओं तथा निर्वचनों में सहयोग देती है। यह विशिष्टता के कुछ ही प्रभावों के प्रयोग को कम करती है। प्राक्कल्पनाओं को सामान्य शब्दों में होना लाभप्रद नहीं होता। प्राक्कल्पना की उपकल्पनाएँ बना लेनी चाहिये। यद्यपि इस प्रक्रिया में अध्ययनकर्ता को अधिक परिश्रम करना पड़ता है, जिससे सामग्री तथा निष्कर्ष के संबंध में निश्चितता आ जाती है। विशिष्टता गुण के विद्यमान रहने के कारण एक निश्चित वैज्ञानिक आधार पर सत्य के अन्वेषण में सुविधा होती है।

आवश्यक पद्धतियों के बिना प्राक्कल्पना का परीक्षण असंभव है। वह प्राक्कल्पना अव्यवहारिक मानी जायेगी जिसे किसी निश्चित प्रणाली की कसौटी पर नहीं उतारा गया हो। गुडे तथा हाट्ट

Scanned with CamScanner

के विचारानुसार जो सिद्धान्तशास्त्री यह भी नहीं जानता कि उसकी प्रक्कल्पना की परीक्षा के लिये कौन-कौन सी पद्धतियाँ उपलब्ध हैं। वह व्यवहारिक प्रश्नों के निर्माण में असफल रहता है। यदि प्राकल्पना की प्रमुख समस्या तुलनात्मक प्रकृति की है तो इसका सफल अध्ययन प्राप्त प्रणालियों के आधार पर ही हो सकता है। हमें इसमें प्रयोग की सीमाओं एवं मान्यताओं पर भी ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। यदि अध्ययन की पद्धतियाँ प्राक्कल्पना के परीक्षण के उद्देश्य की पूर्ति में उपयोगी सिद्ध नहीं होती हैं, तो हमे नई अध्ययन प्रणालियों एवं यंत्रों का प्रयोग करना चाहिए।

यदि प्राक्कल्पना का संबंध पूर्वनिर्मित सिद्धांतों से रहता है तो उसकी निरंतरता में किसी भी प्रकार का व्यवधान उपस्थित नहीं हो पाता। यदि प्राक्कल्पनाएँ नई होती है और उनमे समानता नहीं रहती तो वे वैज्ञानिक प्रकृति की तीव्रतापूर्वक पुष्टि करने मे कम उपयोगी सिद्ध होती है। गुडे तथा हाट्ट के मतानुसार कोई विज्ञान संचयी तभी हो सकता है जब वह उपलब्ध तथ्यों एवं सिद्धान्त समूह पर पूर्ण रूप से लागू हो। विज्ञान का विकास तभी हो सकता है जब समस्त अध्ययन एक ही सर्वेक्षण के रूप में हो। यदि प्रत्येक अध्ययन एक पृथक सर्वेक्षण हो जाये तो निश्चित ही विज्ञान का ~~विज्ञान~~ विकास रुक जायेगा।

Scanned with CamScanner